

१ ॥ गणेशाय नमः ॥

34

॥ यथा मर्म गजकायाः शूद्रा गिरिनिवासिनः शगमनया र्थनाशायः ॥

मनायतः अन्यैश्च वक्ष्यते

॥ धनं ल नियद यः असा मव ल यद

X मा

१३० श्री भवाणेश्वर स्तोत्रं चरकविधि विभूतिस्तोत्रोपधि मालाशोधनविधि श्रीमसेनप्रवच मालिनीदण्डक

श्रीसर्वलोकमधुलान्कमयदनिहिता नन्दनकिं सुलिमां सुष्टिव्यायवतुर्वीकल
कलुगर्गयश्चकं वा न्यायकं शावत्वावधयश्चकार्ष्युनत्रपित्रतुर्वं नर्तुगामधुलन
संसृष्टं यनगमोनममथ गुर्ववलेवर्वशीकुञ्जं ॥ अस्मिन् श्रीलीमसनः यश्च
यहलनः अस्मिन् धययः अस्मिन् विधिष्वीयनमस्तु ॥ अस्मिन्
ननः वाकनकायः अस्मिन् ॥ अस्मिन् यथायथा वाक् ॥ नृञ्जयी निश्चयगासनस्मा
रुवरुयदवधारेववामनुमूर्तिश्च धीचधुसनाथः यधनः रुधिरुधालाकपालोः
रुधिरुधालायाश्च वक्षी सिद्धेयः पित्रुगधसहिमागवः ॥ अस्मिन् यालाया आगिन्ध्यायानय

कास्तुलजलरवत्रा ॥ यधमगजपिवस्तु ॥ पिवस्तु दवना ॥ सर्वसत्रुडाश्च विनायकाश्च
यागिन्यः ॥ अस्मिन् यालाश्च मम दहयवस्तिगा ॥ अविनासारुवदहः ॥ अजवामवधमवय
यामः ॥ अकरयन्नास्ति वाजशीसुखसम्यदः ॥ नृञ्जनमः ॥ श्रीनाथाय ॥ नृञ्जनमः ॥ श्रीसि
द्धिनाथाय ॥ नृञ्जनमः ॥ श्रीकुञ्जनाथाय ॥ ॥ अस्मिन् यादुकां वा ॥ वाकं न धयय
सगुनकायः ॥ माहनिद्रायः ॥ ॥ अविस्तककायः ॥ अमूककामनार्थलीमसनरुद्र
वकायः ॥ अविस्तकसमगमस्तु ॥ यवयाः ॥ अकपदर्यावहायः ॥ स्नानकाकायः ॥ सिद्धिल
क्षीयाः ॥ अकनस्नानकाकायः ॥ न्यासः ॥ अगिरीमस्यना चर्न विधिः समाकः ॥
x वलिः ॥ अथ ॥ नासियः ॥ सूर्याद्यः ॥ यव्यनमः ॥

विष्णुना वाञ्छुलः ॥ नित्यं प्रियं वाचकं ॥ ३ ॥ वकुमर्हसि विष्णुनः ममानन्द
कावगर्कं ॥ ४ ॥ अत्र उवाच ॥ कथं मनो मया युक्तं ॥ श्रीमन्नाञ्छुप्रिय ॥ ४ ॥
सर्वकामार्थददविः ॥ वाञ्छुलः गयदन्धी ॥ यावत्तु वाच ॥ यत्तु यावत्तु विना दवः ॥ श्रीम
न्नाञ्छुलः वलः ॥ ५ ॥ सावसावः समुद्रः ॥ नानामर्कववादिर्कं ॥ ६ ॥ अत्र उवा
च ॥ ७ ॥ दंशुकवर्षादिर्कं ॥ तत्र वसुमया कर्ण ॥ ८ ॥ वक्त्रामिगलनस्मिन्मया कः शुक्ल
गुणनवर्णः ॥ अस्मिन् श्रीमन्नाञ्छुलः कवचः ॥ सावसावः सदाशिवः ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र
नवः ॥ श्रीमन्नाञ्छुलः दवना सर्वकामार्थसिद्धिर्कथय विनियोगः ॥ श्रीमन्नाञ्छुलः

न्यस्यः ॥ तत्र वसुमन्सर्वन्यस्यः ॥ ९ ॥ दवर्माददयन्यस्यः ॥ गगनमन्नाञ्छुलः ॥ तत्र
वर्णितसिन्धुस्यः ॥ ललाटः श्रीमदधर्नः ॥ १० ॥ नगः ॥ अत्र उवाच ॥ सावसावः नानाम
र्कवर्णः ॥ कर्णुयाः ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ कवचः ॥ ११ ॥ नाञ्छुलः ॥ अत्र उवाच ॥
सर्वकामार्थसिद्धिर्कथय विनियोगः ॥ १२ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ १३ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ १४ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ १५ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ १६ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ १७ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ १८ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ १९ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ २० ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ २१ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ २२ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ २३ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ २४ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ २५ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ २६ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ २७ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ २८ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ २९ ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥
॥ ३० ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥ अत्र उवाच ॥

॥ उत्तमसुपा ० काना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

二
天
臣
臣
臣
臣
臣

साहाय्यजालिनीयदयः॥ ॥ॐ नमः श्रीमहादेव वायः॥ श्री
देव उवाच॥ ॐ जय त्वं मालिनी देवीः निर्मलमदनाशिनी। ज्ञा
नक्षकिः परमदेवीः वर्द्धिस्व गजवर्द्धनी॥ जननी सर्वलुगानां सु
लक्ष्मि यत्र स्थिता। माता वीरावली देवीः कावर्द्धं कूलवत्सल॥
मिथय नमनत्वं निर्वाहं संस्तुति गजामयि। निःसृगा वाक्त्र

नाः स्नानक्षकिः स्वं मिच्छा कियामि मङ्गला मृगवत्सलः न
पुनः सूर्यनागः उवत्त कृष्णलाकावत्सलः॥ पुरुषादक्षकि
सुसंगीयसहासूत्राः गजवत्सलः गिरिवत्सलः शिववत्सलः
नामाय वामावत्सलीना क्रीडिका॥ विन्दुवत्सलः वधूनां चन्दारु
गिरिवत्सलः॥ जडमकावत्सलः कावत्सलः कावत्सलः॥ गत्व माय
यनं गत्व वत्सलः रत्नकालवत्सलः यिनी। आदिन क्रीडिका

वाथानि नूपास्व नूपाच, श्री क ष संभारुनी । वडमाना ग थ
नन ष कि ४ संसुक्ता, शि मूय मला द्यी धनी । ला न रू नि नि थी ह्म ।
सिका ल्हा न रू गोः रु ना का च रू नी ष रू की ध. स द्या सिका नू य हि
०० ना व चि । लं म रु स न सं रा गिनी । षा उ ष ना मृता वि न्द्र सु
रूनी । स्य द द रु दू ना ष ष स म्य क य नान न्द, नि द्वा न सो क पु द रू
रू व वा उ द्या न की ज नू ध क । य न मा न नी व ड, मा ना चि न रू ध

५
स्वगी सिद्धि या । ग ष्थ नीः सिद्धि मा ना वि रु ४ ष ये ना नी रि था
रु वी । वा ग्वि शु द्धा द्वि वा सिद्धि वा गी ०० ष्थ नी । मा नू का सि रू
का किया, म रु ला सिद्धि ले ष्ठी ४ ॥ वि रू नि सं रू नि ४ मू रू नि रू नि
सा स व ष्थ नि, स्व नि रू या नि न ना य धी ॥ व क व रु क लो ल स्व ना रि
नू पा म रु सू ष्था या ग पि या, लं उ ये या रू नि ना व ड सं भारु धी । लं
न वा ल्मा न न्द द व, स्य वा ल्मा न ना मृ ना म नु मा रू नी नू (ग रू रू रू)

चनु ४ यश्च यष्ट सफ याष्टो । एतिसंस्मृत्य ४ सदा माः
४ । सायि यो नान्निहोस्तार्धु वे । पर्वना (ग) यिसं वक्रुस । दिवि
ननागमन्महालक्ष्मीयुद । रुम यो नान्य दा नान्नाक ४ यः
ध्रुवमध्रुमे हा दा षड्रुहा विमं यार्कि । संस्मृत्य दवी लवदी
प्रवपूर्व यन्दा नूकानां । सुवर्दि यो मा धिक्क सत्क धुला यष्ट
सुल । ययिवद्धा ईरे वल्लने नाना गया । (ग) लु जाव ध्वयादा ग

यत्वं नाम स कीर्तनां द विमू नि धा नम हा ध्या धिः
संस्मृत्य पा दा न विन्दु सं दा या नम हा काली कालाग्निग
पुरे ४ । स्कन्द (ग) विन्दु वृद्धं नु च नार्क पूषा य (ध्रु) सात्री मा
लालि सं न्य अ कि उल्क सत्पि उल ॥ सर्ववीनां वि करे ववीरे
४ । सर्वभग गार्ह क्रम स्वा ष ना धं । क्रम स्वा ष ना धं धिवा । न
गाम हा दवी । एव वनम हात्मना । गगालिं गविनि हि य

गायत्रमध्वरी। यदकुयपलिउरुं मागा दिवज नार्हवना।
मरुसिमदविकस्यवेनिश्वमनम॥ ॐ निधीमात्रनिदधु
कागसमाफ॥ ॥ यश्चवर्लि ॥ ॥ छिनवर्लि ॥ समकाः
नकाय॥ ॥ मगवियकवधस ॥ ॥ पीगचूनमधुललिविवाय
गार्वकीर्धु॥ ॥ मंधुल ॥ ॥ यूनसस्खलयाय ॥ मरुमाः
य ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ धिुकार्ये ॥ ॥ श्रीरूडवाच ॥ ॥ नमस्तु नम

सूक्तददयनायन। उका किनी वि धुर्द्धात्मः नादास्वा
नालिनि॥ ॥ जूदरायसमन्यन्नः ज्वलविश्वधनिधीम
धुलनी निशंरुं समध्वयवस्मिगा॥ ॥ सामसूर्याग्निमध्व
यामवापियजयन॥ ॥ ॐ कानविग्रहावस्तुः रुकानाद्वाधसूयि
तालगुणगथास्तु॥ ॥ जनकयाकययय॥ ॥ रुकानाद्वाधकनांध
मर्किजलमाहिग॥ ॥ सुकनाश्वमरुमायः ॥ ॥ वनदलाकपू

२दवी क्राटम वासुमंदा जहि गा झरुने ध्ये धुःका धउ नम
॥५॥ माली ली वल ध्ये वः संराव ध्ये व वासुम ॥४॥ न थ का ल
दिव ॥ २द व दूगी न मा म न ॥ ४॥ रु ड का ली म हा द वी २व म्म म्म धि
रु ॥ ४॥ न रु च्छ म्म रु ध न ॥ न म्म रु ॥ क रू पि धी ॥ ४॥ रु रु व
म्या रु न ॥ २द या ल व रु वू रू ध म ॥ ४॥ रु ना स्मि ना म् रु मा य ॥
मि द दि गं ॥ ४॥ य स्मि द य ० ग स्मार्न ॥ २गि स् ध्वं व व मा न व

॥ ये निगा कामा न मूर्ध्नि रत्नमिव नृत्तं ॥ ॐ गिदि
क समप्रखं म हा माया भ्रातृ समाप ॥ ॥ गगारी म सुनया
॥ नैज रौ द्र द या दि ष ग न्यास ॥ न ग व कुं न्यास ॥ नैज उं दौ य
कां य य धि स्त्रि न मूर्ध्नि य पा य ॥ नैज उं दौ द कि ध व का य ज
मूर्ध्नि य पा य ॥ नैज उं दौ य ष्ठि म व का य री म मूर्ध्नि य पा य ॥
उं दौ उं र न व का य न कूल मूर्ध्नि य पा य ॥ नैज उं दौ उं द व

रु द न मूर्ध्नि य पा य ॥ ॐ गि व का न्यास ॥ ॥ गग श्या द
न्यास ॥ नैज य नै लं वं हं वं स रं रं जौ दौ कौ द्र द या य न म ॥
॥ गग न व गि लं न्यास ॥ नैज य क गि ल्या य पा य ॥ आ ध न ॥
उं य नृ ष ग ल्या य पा य ॥ लिं (ग) ॥ नैज उं नी गि ग ल्या य पा य ॥
॥ नैज उं का ल ग ल्या य पा य ॥ द्द दी य ॥ नैज उं मा या ग ल्या य पा
॥ ॥ नैज उं वि द्या ग ल्या य पा य ॥ मूर व ॥ नैज उं गि व न

॥ यः ॥ ह्रम (ध) ॥ नैज उँ ॥ वी ॥ वन गत्वा ययायू ॥ ललाट ॥ ॥
सदा शिव गत्वा ययायू ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥ गंगा आसना ॥ ॥
न ॥ ॥ गुह्यलि ॥ ॥ आचारुनादी ॥ ॥ धनू मूढा ॥ ॥ नैज
पद्मनाभ विद्म रुक्मज्जद रुद्राय धीमहि ॥ न नान्दु ॥ युवाय
॥ गंगा ध्याय वरुणं (ध) पूजन ॥ ॥ नैज यै नै नै वी व सै
शं जी को हृदयाय नमः ॥ ॥ गंगा मुनि वलन पूजन ॥

॥ नैज उँ ॥ वी ॥ वन गत्वा ययायू ॥ ललाट ॥ ॥
सदा शिव गत्वा ययायू ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥ गंगा आसना ॥ ॥
न ॥ ॥ गुह्यलि ॥ ॥ आचारुनादी ॥ ॥ धनू मूढा ॥ ॥ नैज
पद्मनाभ विद्म रुक्मज्जद रुद्राय धीमहि ॥ न नान्दु ॥ युवाय
॥ गंगा ध्याय वरुणं (ध) पूजन ॥ ॥ नैज यै नै नै वी व सै
शं जी को हृदयाय नमः ॥ ॥ गंगा मुनि वलन पूजन ॥

रुन वाययायू ॥ नैं ५ शं न क पाद म हा रे न वाययायू ॥
 रूनीम नू प म हा रु न वाययायू ॥ नैं ५ जै हा ट क म हा रु न
 ययायू ॥ नैं ५ उं जै च न म हा रु न वाययायू ॥ नैं ५ रु नु का दि ग
 म था व लिं ग रू रू हा ॥ ॥ अ सि ना ग म दि य त्रि वा न य जा ४ ॥ ॥
 ५ जै जै सि नां रु न वाययायू ॥ नैं ५ वै नू नू रु न वाययायू ॥ नैं ५
 का ध रु न वाययायू ॥ नैं ५ वै च धु रु न वाययायू ॥ नैं ५ गै उ नू

रुन बाय पायू ॥ नैजयै कपाल रुन बाय पायू ॥ नैजयै हीष धरु
न बाय पायू ॥ नैजयै संहरुन रुन बाय पायू ॥ ॥ वृष्णाया दिः य
न बाय पायू ॥ नैजयै वृष्णाया दिः य ॥ नैजयै मा रु ध्य य पायू ॥ नैज
को मा य पायू ॥ नैजयै वृष्णाया दिः य ॥ नैजयै वा ना ध्य य पायू ॥ नैज
रुन बाय पायू ॥ नैजयै वाम रु ध्य य पायू ॥ नैजयै महा ल रु
॥ उग्र व रु ॥ नैजयै वाम रु ध्य य पायू ॥ नैजयै वाम रु ध्य य

[illegible]

॥ सत्क जयना ३

ह्रूं मध्वमाथानमः॥ ह्रौं अनामिकाथानमः॥ ह्रौं कनिष्ठाथानमः॥ ह्रूं अस्त्राय रुद्रः॥
ह्रौं हृदयाय नमः॥ ह्रौं शिवसखायानमः॥ ह्रौं शिखाय वाषट्॥ ह्रौं कक्षाय नमः॥
ह्रौं नग्नयाय नमः॥ ह्रौं अस्त्राय रुद्रः॥ ॥ आसन ॥ जें अशरालोसनायाइ कायऊया
मिः॥ जें अनवासनाययाइ काः॥ ॥ ग्रायां अलि॥ जें अद्रां यिभयनाययाइ काः॥
॥ ३ ॥ वलि॥ लिखलं मूडा॥ विन्दुः॥ ॥ गनायि विन्दुं नीय जाः॥ न्यास॥ मुं अस्त्राय
रुद्रः॥ मुं अस्त्रायानमः॥ सिं शिवसखां दां॥ सिंगऊं नीथानमः॥ ह्रूं मध्वमाथानमः॥
ह्रौं अनामिकाथानमः॥ ह्रौं कनिष्ठाथानमः॥ मुं अस्त्राय रुद्रः॥ ह्रौं हृदयाय नमः॥ सिं

निवस स्वाहा ॥ सु नि स्वा य वा य द ॥ सु क व या य न म ॥ सु न ग ग या य न म ॥ सु ष य रु द ॥
 आ स न ॥ सु ङ आ रा त्वा स क ङ क म ना स ना य या दू ङ न ना स ना य या दू कां ॥
 वा ॥ सु नि ॥ सु ङ सु ॥ वि ष वि का ग कि स रु ना य या दू कां ॥ ३ ॥ व लि ॥ या नि मू डा ॥
 वि न्द ॥ ॥ ग ना सु ॥ यु न यू डा ॥ अ ष्ठ म न न म ॥ व व य न म ॥ वा सा य २ ॥ रु न म न
 २ ॥ वि रि ष ना य २ ॥ दू या य २ ॥ य र्थु वा मा य २ ॥ मा र्क दू य २ ॥ व ली म ल ॥ स म न ॥
 यं ० दू डा ॥ ल ख हा य ॥ ४ ॥ अ म्ना य रु द ॥ सुं गी र्व न्द र्व न म ॥ सुं डी न क र्व नु न म ॥
 सुं र्धु न र्व न म ॥ सुं ग र्व ध नि या य ॥ ॥ धू य सो ध न ॥ ल ख न हा य ॥ ४ ॥ अ म्ना य रु द ॥
 * म नु मा र्ग (ग स्वा रु १)

ला पा दा य ॥ ४ ॥ अ म्ना य रु द ॥ रु द ॥ सु नि म नु य गा द य ॥ अ रु ग न वा ल रु व न ॥ रु द ॥
 मि म न न न अ रु द न ॥ दी ग व द न ॥ वा ख ग नि व य ॥ सा य ॥ ध नू मू डा ॥ इ ध थि या ट या
 य ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ न म ॥ सु नि म नु न र्व न ना रि व र्ग ॥ य व न म ॥ इ ध थि या म य ॥ य ॥ २ ॥ २ ॥
 सुं डी री म सु न वि द र्धु र्ग ना ल क्री य वा द या य ॥ सुं स र्व ग म वा य रु न स र्व धू या य य नि रु
 द ॥ ॥ दी य सा ध न ॥ ल ख हा य ॥ ४ ॥ अ म्ना य रु द ॥ वा पा दा य ॥ ४ ॥ अ म्ना य रु द ॥
 अ रु ग न वा ल रु व न ॥ रु द ॥ सु नि म नु नु गा द य ॥ ख व न वा ल ॥ रु द ॥ सु नि म नु नु गा द य ॥
 दी ग र्व द न या य ॥ सु नि अ र्व धु न ॥ सा य ॥ वा ख ग नि व य ॥ ध नू मू डा ॥ न म ॥ सु नि म
 * क र्मा दि ४